ॐ पिताश्री 8/7/61

बच्चों ने गीत सुना। बचपन की एक्टीविटी भी देखी। बाबा कहते हैं यह खेल–पाल सब होते हैं बच्चों को बहलाने लिए। कहते हैं यह बचपन के दिन भूल न जाना, नहीं तो तकदीर पर लकीर लग जावेगी। ऐसे बहुतों पर लग चुकी है। यह भी ड्रामा। ऐसे नहीं कि ड्रामा कहकर लकीर लगाय देनी है। सच्ची कमाई तुम बच्चों की ही है। बाहर वालों की तो कुछ नहीं है, पूरा कब्रिस्तान है। भारत परिस्तान था, जिसको वैकुण्ठ कहते हैं। उस वैकुण्ठ के नज़ारे बच्चों को दिखाय जाते हैं। यह सा० आदि कराना बाबा के हाथ में है। कोई को न भी कराते हैं; क्योंकि सा० कर, खेल–पाल कर और फिर चला जाय तो सद्गति को पाय लेंगे। नम्बरवार तो हैं ना। अब किंगडम स्थापन हो रही है। इसका सा० भी कराय रहे हैं। अगर 30 ने सा० किया, 10 ने न किया तो ऐसे थोड़े ही कहेंगे हमको जब सा० हो तब हम मानें। यह ख्याल न आना चाहिए। बाबा ने समझाया है ध्यानी से ज्ञानी श्रेष्ठ है। ध्यान में माया इंटरफियर कर सकती है। करने वाले कच्चे भी हो पड़ते हैं। कोई–2 संदेशी बहुत मजबूत है। नम्बर वन संदेशी है गुलज़ार, फिर दूसरी संदेशी जो अब पटना में है, उनका नाम ही संदेशी रख दिया है। यह दोनों बहुत पुरानी है। इनसे ही फिर ... मालूम पड़ा कि संदेशी भी होने वाली है।

8/7/61 2

तो यह बचपन है। बाप दादा की गोद में तुम बच्चों को बहुत सुख मिलने हैं। अथाह सुख है। इसके लिए तुम अब पुरुषार्थ कर रहे हो। तुम भारत के लकी स्टार्स हो। ज्ञान सूर्य, ज्ञान चंद्रमा और ज्ञान लकी सितारे हैं, जो बाबा की सर्विस रात–दिन तत्पर हैं। बाबा कहते हैं– हे नींद को जीतने वाले बच्चे! रात को भी कमाई करनी है। धंधे में कमाई के लिए रात को भी जागना पड़ता है। तुम बच्चों को बहुत कमाई करनी है। इसमें गफलत न होनी चाहिए। गीत में है ना क्यों गाफल सो पारे। अब सोने का टाइम नहीं है। माया बड़ी दुश्मन है। कोई न कोई समय वार कर सकती है; इसलिए रात–दिन बाबा की याद में रहना चाहिए। इसलिए बाबा कहते हैं रात को पहले 15 मिनट, आधा घण्टा बाबा की याद में बैठने की हेर रखेंगे तो फिर नींद सतावेगी नहीं। चिंतन चलता रहेगा। बहुतों को बाबा बहलाते भी है। ऐसा मीठा बाबा कल्प–2 तुम देखते हो। देवताएँ इतने मीठे नहीं जितना बाबा मीठा है। देवताओं को भी बाबा ने मीठा बनाया है ना। हमें भी बाबा कितना गुल–2 बना रहे हैं। ऐसे बाबा को भूलना नहीं है। इसी को कहा जाता है बुद्धियोग। उस सर्वशक्तिवान साथ बुद्धियोग लगाने से बल मिलता है। विकर्म विनाश होते हैं। यह कवच है माया पर जीत पाने का और विकर्मों को भस्म करने का। बाकी गंगा स्नान .... आदि कुछ भी करने से कोई प्राप्ति नहीं हो सकती।

मीठे बच्चे तुम जानते हो यह बड़ा भारी ह्यूज ड्रामा है। हरेक का पार्ट नूँधा हुआ है। अब तुमको बच्चे बुलाते हैं अर्थात् काँटे से फूल बनाते हैं। बाबा की गोद में बैठे–2 तुम ट्रान्सफर हो जाते हो। इन बच्चों से अनुभव पूछना चाहिए। बाबा कितनी मेहनत करते हैं बच्चों पर। स्कूल में बच्चों का घूमना–फिरना सब होता है ना। यह है एम–ऑब्जेक्ट का सा०– हम भविष्य में प्रिन्स–प्रिन्सेज़ बनेंगे, हम महाराणी–महाराजा बनेंगे। एक आँख में मुक्ति, दूसरी आँख में जीवनमुक्ति फिरती रहती है। बाबा झट रस्सी खैंच लेते हैं; परन्तु यह भी हेर परनी(पड़नी) चाहिए। भक्तिमार्ग में तो जब कोई बहुत नौधा भक्ति करते हैं तब उनको सा० होता है। यहाँ तो सेकण्ड में चले जाते हैं। तुम्हारी सगाई की हुई है। अगर राम करेंगे तो ससुर घर जावेंगे, पियर घर थोड़े ही करेंगे। ब्रह्मा का है पियर घर। विष्णु का है ससुर घर। तुम आप जाए खेल–पाल कर सकते हो। तो यह बातें भूलनी न है। अगर कोई भूल जाते हैं तो फिर एक/दो को सावधान कर खड़ा करना है। यह ज्ञान संजीवनी बूटी है। शास्त्रों में तो बहुत झूठी बातें लगा दी हैं। अब वो सब सामना तो ज़रूर करेंगे। यह छोटी बच्ची भी हिम्मत रख कोई को समझावें तो हिम्मदे मरदा मददे खुदा। बाबा इनमें प्रवेश कर सा० भी कराय सकते हैं और मुरली भी चला सकते हैं; परन्तु ऐसी खड़ी होनी चाहिए। कन्याओं ने ही बाण मारे हैं ना। यह पार्ट बजने वाला है। इन गुरुओं को जीत लिया तो बस। गुरुओं के फालोअर्स कहलाते हैं; परन्तु फॉलो तो करते नहीं हैं। गुरु लोग खुद कहते हैं गृहस्थ धर्म में रहना अच्छा है। बोलो, तुमने भला क्यों छोड़ा है? सामना करना है। यह भी एक दिन माताओं के चरणों में आकर गिरेंगे। माताओं का ही तिरस्कार करते हैं। स्त्री का मुँह नहीं देखते। तो यह देह–अभिमान हुआ ना। यहाँ तो हमारी दृष्टि रहती है आत्मा को देखने की। रूह को ज्ञान

इंजेक्शन लगाते हैं। कहते भी हैं यह पापात्मा, पुण्यात्मा है। फिर आत्मा निर्लेप कैसे कहते! बहुत गंदे बन परे(पड़े) हैं। आत्मा निर्लेप समझ फिर शराब पीते, गंद खाते रहते। अनेक मत वाले हैं। अनेक प्रकार की रिद्धि–सिद्धि वाले मठ–पंथ भी निकाले हैं। बाबा इन सबसे छुड़ाते हैं। बस, एक ही गीता ज्ञान सुनाते हैं। दूसरी बात नहीं। सच्चे बाबा द्वारा सच्चा ज्ञान लो। हम सच खण्ड में चलते हैं। औरों द्वारा जूठा ज्ञान सुनते–2 कड़(वे) खण्ड में आ गए हैं। सतयुग को सच्चा खण्ड कहा जाता है। सच्चा बादशाह सच खण्ड स्थापन करने यहाँ आते हैं। यहाँ डाडा, बाबा, मम्मा और सितारे सब बैठे हैं। शूद्र कोई देखने में न आवेगा। वहाँ बाहर जाने से फिर कितने के संग में आना परता(पड़ता) है। कहा जाता है संग तारे कुसंग बोरे।

**8/7/61** **3**

कितना मीठा बाबा है! अब तुम जान गए हो कैसे बाबा आते हैं, कैसे ज्ञानामृत का कलश देते हैं। गीता, भागवत, रामायण, चंद्रकांत वेदान्त आदि सब इस समय के हैं। कल्याणकारी सिर्फ एक गीता है। संस्कृत भी है नहीं। संस्कृत भाषा तो वहाँ सतयुग में भी नहीं चलती। वहाँ की भाषा भी यह बच्चे समझा सकते हैं। यहाँ तो हरेक देश की भाषा अपनी रहती है। हरेक को अपने धर्म के लिए कितना प्यार रहता है। हमको अपने देवताओं लिए कितना प्यार है। अपना धर्म सुख क(ो) देने वाला है। अपन कोशिश करते हैं वैकुण्ठ का मालिक बन जाए। ऐसे भी नहीं है कि सब हाथ आ जावेंगे। कई खिसक भी जावेंगे; क्योंकि कोई की तकदीर कैसी, कोई की कैसी होती है। यह तो रस्सी खैंचने वाला शिवबाबा है, इस बाबा का काम नहीं। यह खुद ही नहीं जाते तो औरों को कैसे भेजेंगे। कोई चाहे हम निर्वाणधाम जावें; परन्तु ऐसे कोई जा नहीं सकते। दिव्य दृष्टि विधाता एक ही बाबा है। हम भी उनके बच्चे सत् गुरु भाई हो गए। फिर जिस्म में आने से भाई–बहन हो जाते हैं। हमको पढ़ाने वाला है शिवबाबा। कृ० की तो बात सिद्ध नहीं होती। कृ० को फिर दिव्य दृष्टि देने की दरकार नहीं। देवताएँ इस पृथ्वी पर कब पैर नहीं धरते। सा० हो सकता है। यह है गुप्त–2 बातें, जो बाबा बिगर कोई समझाय न सके। यह ज्ञान कोई दे न सके। तुम जानते हो भगवान जब आते हैं तो बहुत आर्टीफिशियल भी बन परते(पड़ते) हैं। इसलिए हंगामा होता है; परन्तु सच्ची बात छुप नहीं सकती। कहा जाता है सच्च की बेरी लुढे; परन्तु डूबे नहीं। माया खूब फँसाने की कोशिश करेगी। उनसे सम्भाल रखनी है। बच्चों का भी कल्याण करना है। यह तो जानते हैं कल्प पहले वाले बच्चे ही अपना राज्य भाग्य लेंगे। अब अपन काँटे से फूल, बेगर टू प्रिन्स बनते हैं। तो ऐसा फूल बनकर फिर बनाना है। बुजुर्ग को खरा(खड़ा) होना चाहिए। यह तो जानते हैं राजधानी स्थापन ज़रूर होनी है। फिर कल्प बाद यह ही रील होगी। सब पार्ट रिपीट होंगे। बाबा की बुद्धि में सारा नॉलेज है ना। बाबा बीजरूप है। हम भी मास्टर बीजरूप है। सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है सो जानते हैं। यह नॉलेज बड़ा वण्डरफुल है! तूफानों से डरना न चाहिए। कल्प पहले भी यह हुआ था। ऐसे समझने से तुम हर्षित रहेंगे और भविष्य पद को याद करना है। तुम बच्चों के लिए तो एक बाबा है। बाबा के लिए फिर अनेक बच्चे हैं। इतने सब बच्चों को याद करना परे(पड़े)। बाबा कहते हैं तुम प्यारे बहुत हो; परन्तु खुश रहो, आबाद रहो, न बिसरो न याद रहो। मुझे तो बाबा को याद करना है ना। कहते हैं मामेकम् याद करो। प्यारे तुम भी बहुत हो। प्यारे बच्चों को याद करते हुए भी फिर बाबा को भी याद करते हैं।

हम सब प० की(के) मददगार हैं राजधानी स्थापन करने लिए। जैसे गाँधी के भी मददगार बने ना। काँग्रेस के पिछारी(पिछाड़ी) यह पाण्डव हैं। तुम लिखते भी हो जो काम गाँधी न कर सका सो हम माताएँ करती हैं। यह भारत माताओं का चित्र भी साथ में ज़रूर होना चाहिए। प्रभातफेरी में तो यह चित्र ज़रूर होना चाहिए। बाबा यह भी बनवाएँगे। अच्छा। ऊँ शान्ति। मनमनाभव।

<u>बापदादा का डायरेक्शनः–</u> स्याणे ज्ञान योग युक्त बच्चे रखड़ी बंधन का उत्सव नज़दीक है, राय निकालो रखड़ी बन्धन पर क्या प्रतिज्ञा करें। बड़ों से कराय पवित्र बनने। श्री कृ० का बड़ा चित्र तो तैयार हुआ ना। उस पर भी लिखवाया गया है ऊपर में कि 5 विकार रूपी माया (रावण) पर योगबल से जीत पहन श्री कृ० ... दैवी जगतजीत बनो। सो चित्र तो मिलेंगे; परन्तु और कोई **Emblem** बतावे जैसे त्रिमूर्ति शिव ..... का लॉकेट कुछ ऐसी वस्तु बनावें जो बड़े–2 लीडरों वा मिनिस्टर्स आदि को दी जाए। ज़रा कोई अपनी ..... भेज दे डेढ़ मास परा(पड़ा) है बाबा बनवाए ल...। ॐ यादप्यार मधुबन से शिवकुमार ..... का स्वीकार करना। .. ... मिलन सब भाई–बहनों से पिछले कल्प जैसे, फिर से जल्द